# अभिविन्यास पाठ्यक्रम

| क्र. सं. | कार्यक्रम विवरण | कार्यक्रम का स्वरूप | अवधि | आयोजक |
|---|---|---|---|---|
| 1 | अभिविन्यास पाठ्यक्रम | अभिविन्यास पाठ्यक्रम | 14 मई, 2018 से 10 जून, 2018 तक | हिंदी शिक्षण अधिगम केंद्र (TLCHS) म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा तथा मानव संसाधन विकास केंद्र, राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज नागपुर विद्यापीठ, नागपुर |

## 1. अभिविन्यास पाठ्यक्रम (दिनांक 14 मई से 10 जून, 2018) स्थान : म. गां. अं. हिं. वि., वर्धा

पंडित मदन मोहन मालवीय शिक्षक एवं शिक्षण अभियान (PMMMNMTT) मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत संचालित हिंदी शिक्षण अधिगम केंद्र (TLCHS) महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा तथा यूजीसी - मानव संसाधन विकास केंद्र (UGC - HRDC) राष्ट्रसंत तुकड़ोजी महाराज नागपुर विश्वविद्यालय, नागपुर के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 14 मई से 10 जून, 2018 तक 28 दिवसीय (चार सप्ताह) अभिविन्यास (Orientation Course) का आयोजन वर्धा में किया गया। इस कार्यक्रम में भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों और संस्थानों से चयनित 36 प्रतिभागियों ने सहभागिता की तथा कार्यक्रम में देश भर से तमाम आमंत्रित विषय-विशेषज्ञों ने अपने व्याख्यानों से प्रतिभागियों को उन्मुखीकरण करते हुए प्रशिक्षित किया।

### उद्घाटन-सत्र दिनांक 14.05.2018

अभिविन्यास पाठ्यक्रम के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के सम -कुलपति, प्रो. आनंदवर्धन शर्मा ने की। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में विलासपुर विश्वविद्यालय से पधारे कुलपति प्रो. जी. डी. शर्मा ने अपना महत्वपूर्ण वक्तव्य दिया। काशी हिन्दू विश्व विद्यालय के हिंदी विभाग से आए प्रो. वशिष्ठ नारायण त्रिपाठी ने उद्घाटन सत्र में अपने विचार रखे। हिंदी शिक्षण अधिगम केंद्र के संयुक्त निदेशक और इस कार्यक्रम के समन्वयक प्रो. अवधेश कुमार ने स्वागत वक्तव्य दिया तथा शिक्षा विभाग के एसोशिएट प्रोफेसर शिरीष पाल सिंह ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन रिसर्च एसोशिएट डॉ. संजय कुमार तिवारी ने किया।

उदघाटन सत्र के उपरांत 'अंतरानुशासनिक शिक्षण' विषय पर विशेषज्ञ के रूप में प्रो. जी. डी. शर्मा तथा 'भारत की लोक नाट्य परम्पराएँ ' विषय पर विशेषज्ञ के रूप में प्रो. वी. एन. त्रिपाठी का सारगर्भित एवं बहुउपयोगी व्याख्यान हुआ।

दीप प्रज्ज्वलन कर कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए मुख्य अतिथि प्रो. जी.डी. शर्मा (मा. कुलपति, विलासपुर विश्वविद्यालय) प्रो. वी. एन. त्रिपाठी, (बीएचयू, वाराणसी) तथा मा. प्रतिकुलपति, प्रो. आनंद वर्धन शर्मा।

## दिनांक 15.05.2018

प्रथम एवं द्वितीय सत्र में राष्ट्रसंत तुकड़ोजी महाराज नागपुर विश्वविद्यालय से पधारीं विषय-विशेषज्ञ **डॉ. रेखा शर्मा** ने उपस्थित प्रतिभागियों के बीच अपना व्यख्यान दिया। उन्होंने शिक्षण के तकनीकी पहलुओं के बारे में अपनी बात रखी। इन्टरनेट के माध्यम से ऑनलाइन विविध शैक्षणिक कार्यक्रमों से भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय (MHRD) द्वारा संचालित 'स्वयं' (SWAYAM) प्लेटफॉर्म के बारे में उन्होंने विस्तृत बातचीत प्रतिभागियों से की। इस प्रोग्राम से जुड़े हुए पारिभाषिक शब्दों तथा इस प्रोग्राम को चलाने और सीखने के विविध प्रयोगों पर उन्होंने जरूरी चर्चा की। यह कार्यक्रम हमारे लिए किस तरह उपयोगी हो सकता है, इसके विविध पहलुओं पर गंभीर परिचर्चा हुई। भारत सरकार के इस उपक्रम के अंतर्गत विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए ऑनलाइन पाठ्यक्रमों की व्यवस्था की गई है। जिनका लाभ प्रत्येक व्यक्ति जो आज की तकनीकों से जुड़ा हुआ है, ले सकता है। यहाँ प्रस्तुत विभिन्न पाठ्यक्रम नई तकनीकों और वैज्ञानिक चिंतन पर आधारित एवं प्रमाणित होते हैं। यहाँ कुछ पाठ्यक्रमों का शुल्क निर्धारित होता है और कुछ मुफ्त में किया जा सकता है। 'स्वयं' भारत सरकार का उपक्रम है, स्वयं (SWAYAM) का पूरा नाम Study Web of Active Learning for Young and Aspiring Minds है। इसके नाम से ही यह प्रकट होता है कि इसे नई पीढ़ी के लिए बनाया गया है। यह कार्यक्रम बेहतरीन संकाय द्वारा बनाया गया है। यह विद्यार्थियों और शिक्षकों दोनों के लिए उपयोगी है। इसके तहत बेहतर अध्ययन सामग्री का उपयोग हुआ है। इसमें यदि प्रतिभागी को समझने में कोई दिक्कत होती है तो वह डिस्कसन फोरम का इस्तेमाल कर सकता है। इसमें प्रतिभागी को अध्ययन के उपरांत परीक्षा भी देनी होती है और उसके लिए उसे ग्रेड दिया जाता है। यह केवल विद्यार्थियों के लिए ही नहीं बल्कि शोधार्थियों और शिक्षकों के लिए भी अत्यंत लाभकारी है।

इस प्लेटफॉर्म के लिए मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा कुछ संस्थानों को विभिन्न पाठ्यक्रम बनाने की ज़िम्मेदारी दी गई है तथा यह भी ज़िम्मेदारी है कि जो ऑनलाइन पाठ्यक्रम इस प्लेटफॉर्म पर आ रहे हैं उनकी गुणवत्ता उच्च स्तरीय बनी रहे। इसके लिए National MOOCs Coordinators (NMC) की व्यवस्था की गई है। इनमें से प्रमुख है विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) जो नॉन-टेक्नॉलॉजी से संबंधित ऑनलाइन परास्नातक पाठ्यक्रमों को बनाता है। दूसरा है सीईसी (CEC) जो नॉन-टेक्नॉलॉजी स्नातक पाठ्यक्रम तैयार करता है। तीसरा IGNOU है जो डिप्लोमा और सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम

बनाता है। इसी तरह NPTEL यूजी और पीजी के सभी टेक्निकल पाठ्यक्रमों को बनाता है। NCERT यह कक्षा नौ से बारह तक के पाठ्यक्रम बनाता है। NIOS उन बच्चों के किए पाठ्यक्रम निर्माण करता है जो बच्चे विद्यालय नहीं जा पाते तथा IIM Bangalore मैनेजमेंट से संबंधित पाठ्यक्रमों का निर्माण करता है।NITTTR जिसका काम है शिक्षा से संबंधित शिक्षकों के लिए कार्यक्रम बनाना। इस तरह आप देख सकते है कि यह आठ मुख्य एनएमसी हैं जिन्हें अलग-अलग दायित्व मिले हैं। डॉ. रेखा शर्मा ने इस तरह बहुत ही जरूरी तकनीकी ज्ञान शिक्षा और शिक्षण सामग्री और संसाधनों से अवगत कराते हुए ईपीजी पाठशाला के बारे में भी विस्तृत विचार-विमर्श किया।

अभिविन्यास पाठ्यक्रम के उद्घाटन अवसर पर उपस्थित प्रो. जी.डी. शर्मा (मा. कुलपति, विलासपुर विश्वविद्यालय) प्रो. वी. एन. त्रिपाठी, (बीएचयू, वाराणसी) समन्वयक, प्रो. अवधेश कुमार, डॉ. शिरीष पाल सिंह अध्यक्षता करते हुए मा. प्रतिकुलपति, प्रो. आनंद वर्धन शर्मा, स्वागत वक्तव्य देते हुए डॉ. संजय कुमार तिवारी।

**तीसरे और चौथे सत्र** में राष्ट्रसंत तुकड़ोजी महाराज नागपुर विश्वविद्यालय से पधारी **डॉ. मंगला हिरवाड़े** ने **'बौद्धिक सम्पदा अधिकार'** (Intellectual Property Rights) विषय पर अपना व्याख्यान दिया तथा प्रतिभागियों से विचार-विमर्श किया। इस व्याख्यान में डॉ. मंगला जी ने बौद्धिक सम्पदा अधिकार के बारे में बहुत गंभीरता से विस्तृत परिचर्चा की, जिसमें उन्होंने बौद्धिक सम्पदा अधिकारों की सीमाओं को बताते हुए उसका परिचय, तथ्य, ट्रेडमार्क, कॉपीराइट आदि के बारे में जरूरी जानकारी प्रतिभागियों के साथ साझा की। बौद्धिक सम्पदा अधिकार को सामान्यतः हम दो भागों में बाँट कर देखते हैं जिसमें पहला है औद्योगिक संपदा (Industrial Property) और दूसरा स्वत्वाधिकार (Copyright & Related Rights)। इसमें हम देखते हैं कि औद्योगिक संपदा के अंतर्गत चार चीजें आती हैं जिनमें Inventions (Patent), Trademark (Goods & Services), Industrial Designs, Geographical Indications प्रमुख हैं। स्वत्वाधिकार (Copyright & Related Rights) के अंतर्गत लेखन, संगीत, नाटक, ऑडियो, वीडियो, तस्वीरें एवं कला कृतियाँ, फोटोग्राफी, साउंड रिकॉर्डिंग इत्यादि इसके अंतर्गत आते हैं। इन दोनों तरह की बौद्धिक संपदा अधिकारों के बारे में उदाहरण के साथ डॉ. मंगला जी ने विस्तृत परिचर्चा की। उन्होंने बताया कि शोध और प्रकाशन से संबंधित तमाम सामग्री का इस्तेमाल आज बहुत सचेत ढंग से करने की आवश्यकता है। 'प्लेगरिज़्म' के संदर्भ में यह तकनीकी सजगता बहुत जरूरी है। डॉ. मंगला जी ने इस विषय के विविध आयामों की विस्तृत समीक्षा की।

## दिनांक 16.05.2018

**प्रथम सत्र** में मुंबई विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग से उपस्थित **प्रो. शेफाली पाण्ड्या** ने शोध प्रस्तावना विषय से जुड़े हुए पहलुओं पर गंभीर परिचर्चा की। इस विषय की शुरुआत उन्होंने शोध प्रस्ताव क्या है ? इसके अन्तर्गत कौन सी चीजें आती हैं ? इसकी परिभाषा क्या है ? आदि विषयों पर प्रतिभागियों से संवाद किया। शोध प्रस्ताव की गुणवत्ता हेतु उन्होंने बहुत सी

अभिविन्यास पाठ्यक्रम में उपस्थित प्रतिभागीगण।

तथ्यात्मक बातें बताईं इसके अंतर्गत शोध विषय, शोध का उद्देश्य, शोध सामग्री, शोध प्रविधियाँ, टूल्स-टेक्निक, सैंपल,आउट पुट इत्यादि बिन्दुओं पर उन्होंने प्रकाश डाला। उन्होंने बताया अपने शोध प्रस्ताव में शोध के प्रयोजन को हमें स्पष्ट करना जरूरी होता है कि इस शोध से समाज और ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में क्या हासिल हो सकता है। शोध प्रस्ताव के तीन महत्वपूर्ण अंग होते हैं जिन पर हमें गंभीरता से केन्द्रित होना होता है- एक मुद्दे या समस्याएँ, दूसरा शोध की रूपरेखा और तीसरा शोध से लाभ। इन आधारों पर संतुलित होते हुए हमें अपने विषय को प्रमाणित करना होता है तथा शोध में कितनी और कैसी रचनात्मकता होगी, इसके लिए भी योजना की प्रतिबद्धता स्पष्ट होनी चाहिए।

भोजनावकाश के बाद **प्रो. शेफाली पाण्ड्या** के द्वारा दिए जा रहे पूर्व सत्र के व्याख्यान को ही आगे जारी रखा गया। सत्र में प्रो. पाण्ड्या ने शोध में हम समस्याओं को कैसे चुनें ? इस प्रश्न के साथ उन्होंने अपने वक्तव्य को आगे बढ़ाया। इसके अंतर्गत उन्होंने विविध तौर-तरीकों को विस्तार से बताया और प्रतिभागियों से विचार-विमर्श किया। शोध समस्या का शोध प्रस्ताव में उल्लेख, साहित्यिक पुनरावलोकन, संबंधितों (Includes), शोध प्रविधियाँ, शोध प्रश्न इत्यादि बिन्दुओं पर उन्होंने गंभीरता से विचार करते हुए प्रतिभागियों को परिचर्चा से लाभान्वित किया।

## दिनांक 17.05.2018

**प्रथम सत्र** में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के नागपुर केंद्र के निदेशक **डॉ. पी. शिवस्वरूप** प्रतिभागियों के बीच पधारे। उनके पहले सत्र का विषय **'मुक्त एवं दूरस्थ अधिगम'** तथा दूसरे सत्र का विषय **'शिक्षकों हेतु आचार संहिता'** रहा। उन्होंने दूरस्थ शिक्षा के विविध आयामों का विश्लेषण करते हुए अपनी बात शुरू की। उच्च शिक्षा में आज भारत के विद्यार्थियों की क्या प्रतिभागिता है ? भारत में पच्चीस प्रतिशत विद्यार्थी ही कॉलेजों में पढ़ पाते हैं। आखिर क्या कारण है कि

पचहत्तर प्रतिशत विद्यार्थी कालेजों में नहीं जा पाते ? इसमें भी हम देखते हैं तो स्त्री और पुरुषों के बीच एक भारी आनुपातिक खाई दिखाई देती है। इसका बड़ा कारण यह है कि स्त्री विद्यार्थी अपने गांवों से दूर शहरों में उच्च शिक्षा के लिए नहीं जा पातीं या सामाजिक संरचना की दृष्टि से घर के लोग उन्हें बाहर पढ़ने के लिए नहीं भेजते। दूसरा कारण यह भी है कि उच्च शिक्षा की भारी-भरकम फीस के अनुकूल उनकी आर्थिक स्थिति नहीं होती। इन समस्याओं को देखते हुए, दूरस्थ शिक्षा अत्यंत उपयोगी सिद्ध होती है। आज की तमाम समस्याओं और भारतीय समाज की परिस्थितियों के सामंजस्य के मुताबिक दूरस्थ शिक्षा कितनी उपयोगी और आवश्यक है, इस विषय पर उन्होंने विस्तार से प्रकाश डाला। दूरस्थ शिक्षा के विविध बिन्दुओं पर परिचर्चा करते हुए उन्होंने उसमें सहभागिता करने और लाभान्वित होने की प्रक्रिया को समझाया। भारत के पहले मुक्त विश्वविद्यालय के रूप में आंध्र प्रदेश मुक्त विश्वविद्यालय के बारे में बताते हुए विभिन्न प्रदेशों में स्थित मुक्त विश्वविद्यालयों के बारे में चर्चा की। इन्दिरा गांधी मुक्त विश्वविद्यालय के और उसके पाठ्यक्रमों के बारे में उन्होंने बताया तथा दूरस्थ शिक्षा और सरकार की योजनाओं और उद्देश्यों के बारे में प्रतिभागियों से विचार-विमर्श किया।

प्रतिभागियों के साथ समूह फोटोग्राफ।

**दूसरे** और **तीसरे सत्र** में व्याख्यान देने के लिए राष्ट्रीय नागरिक सुरक्षा कॉलेज, नागपुर के निदेशक डॉ. जी. एस. सैनी ने 'आपदा और तैयारियां' विषय पर अपना बेहतरीन व्याख्यान दिया। आपदा प्रबंधन जैसे महत्वपूर्ण मुद्दे पर सुरक्षा और सतर्कता की तमाम सजगताओं की ओर उन्होंने प्रतिभागियों का ध्यान केन्द्रित किया। हृदयघात जैसी समस्या से लेकर भूकंप, बाढ़ और अत्याधुनिक बीमारियों की विषाणुओं के प्रकोप तक उन्होंने बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी प्रतिभागियों को दी तथा आपदा से बचाव के बहुत से रास्ते सुझाए। भारत सरकार और विश्व आपदा संगठनों की भी अपने वक्तव्य में उन्होंने चर्चा की।

## दिनांक 18.05.2018

**प्रथम सत्र** में महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के कार्यकारी कुलसचिव **श्री कादर नवाज खान** ने विषय-विशेषज्ञ के रूप में सरकारी और गैरसरकारी संस्थानों में अवकाश का स्वरूप और उनके प्रकार पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। इसके अंतर्गत अकादमिक परिसर में कितने तरह की छुट्टियों का प्रावधान है, इस पर विस्तार से परिचर्चा की।

अवकाश का अधिकार, अधिकार और कर्तव्य, अवकाश के उद्देश्य तथा विविध अवकाशों की रूपरेखा पर जरूरी विचार प्रस्तुत किया।

**दूसरे सत्र** में गांधी आयुर्विज्ञान संस्थान, सेवाग्राम से पधारीं **डॉ. अनुपमा गुप्ता** ने **'युवा स्वास्थ्य : मूलभूत सिद्धांत'** विषय पर अपना वक्तव्य दिया। इसमें उन्होंने शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के विषय में गहराई से प्रकाश डाला। उन्होंने सबसे पहले स्वस्थ व्यक्ति के क्या-क्या मानदंड होते हैं, इस पर ज़रूरी बात की। जिसमें उन्होंने शारीरिक स्वास्थ्य के लिए बी एम आई मॉडल की चर्चा की और मानसिक स्वस्थ्य के लिए पी एच आई मॉडल का उल्लेख किया। डॉ. अनुपमा का यह व्याख्यान बहुत ही रोचक और ज्ञानवर्धक रहा।

**तृतीय सत्र** में हिंदी शिक्षण अधिगम केंद्र के संयुक्त निदेशक **प्रो. अवधेश कुमार** का वक्तव्य हुआ। इनका विषय था **'व्यक्तित्व विकास में शिक्षक की भूमिका : आचरण और मूल्य'**। इसमें उन्होंने नैतिकता, गुणवत्ता और अध्यापन कौशल पर विस्तार से प्रकाश डाला। व्याख्यान देते हुए उन्होंने हिंदी के शास्त्रीय काव्य ग्रन्थों से अनेक उदाहरण दिए और एक उदात्त चरित्र के मूल्यों की गुणवत्ता पर बल देते हुए गंभीर चर्चा की। उन्होंने व्यक्तित्व के विकास के लिए संवेदना और नैतिकता को आवश्यक बताते हुए चरित्र निर्माण पर बल देने की बात की।

अभिविन्यास पाठ्यक्रम में विशेषज्ञ व्याख्यान देते हुए पाठ्यक्रम समन्वयक, प्रो. अवधेश कुमार।

**चतुर्थ सत्र** में महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के प्रतिकुलपति, **प्रो. आनंदवर्धन शर्मा** ने समूह निर्माण की अवधारण, उसका स्वरूप, रूपरेखा और उसके उद्देश्य के बारे में प्रतिभागियों से परिचर्चा करते हुए, प्रयोगात्मक सहभागिता में साझीदार बानाया। समस्त प्रतिभागियों को उन्होंने छः समूहों में विभाजित कर प्रत्येक समूह व व्यक्ति के लिए कुछ सामग्री मुहैया कराई। जिसमें कुछ प्लास्टिक के टुकड़े थे । जिनका इस्तेमाल स्क्वायर बनाने के लिए करना था। इस प्रयोग से उन्होंने समूह में एक सफल सहयोग भावना के लिए यह प्रविधि अपनाई। इस अनुभव पर प्रतिभागियों ने भी अपनी बात रखी।

पाठ्यक्रम के दौरान विषय-विशेषज्ञ, मा. प्रतिकुलपति, प्रो. आनंद वर्धन शर्मा तथा पाठ्यक्रम समन्वयक, डॉ. शिरीष पाल सिंह।

## दिनांक 19.05.2018

इस दिन के **प्रथम एवं द्वितीय सत्र** में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, भोपाल से आए **प्रो. एन. सी. ओझा** का व्याख्यान **'21 वीं सदी में शिक्षण कौशल'** विषय पर आयोजित हुआ। इस व्याख्यान में उन्होंने नई सदी की समसामयिक चुनौतियों की चर्चा करते हुए शिक्षण में नए कौशलों को वैज्ञानिक ढंग से स्वीकार करने की बात कही। आज तेजी से विकसित हो रहे समाज में जो जीवन शैलीगत बदलाव आए हैं, उनसे हमारी शिक्षा व्यवस्था भी प्रभावित हुई है। इस प्रभावित हुई शिक्षा व्यवस्था में शिक्षण का स्वरूप बहुत बदल गया है। उन्होंने शिक्षण कौशल में बदलाव कारणों पर बिन्दुवार चर्चा की तथा 21वीं. सदी में भारत की स्थिति और उसके अनुकूल शिक्षा की आवश्यकता तथा जरूरी शिक्षण कौशल को अपने विमर्श का केंद्रीय बिन्दु रखा।

**'फिल्म पूर्वावलोकन तथा विचार-विमर्श'** विषय पर तृतीय और चतुर्थ सत्र में महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के एडजंक्ट प्रोफेसर श्री **राकेश मंजुल** ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। उन्होंने आज के समाज पर सिनेमा का असर, सिनेमा से समाज को क्या उम्मीदें हैं ? सिनेमा समाज से कैसे जुड़ता है ? इन सवालों से उन्होंने अपनी बात शुरू की। ऐसे ही कुछ सवालों के बीच से उन्होंने नरेटिव और लेक्चर के अंतरसंबंध की चर्चा की। आगे सिनेमा के माध्यम से यह भी बताया कि नरेटिव किस तरह से नरेसन बनता है। उन्होंने दुनिया के इतिहास में घटित तमाम घटनाएँ और भारतीय संस्कृति की राजनीतिक ऐतिहासिकता, किस तरह सिनेमा में आई या समाज से सिनेमा किस तरह प्रभावित हुआ, इसका एक खाका प्रतिभागियों के सामने रखा। उन्होंने शास्त्रीय सिनेमा की कई फिल्मों के कुछ छोटे-छोटे हिस्से प्रतिभागियों के बीच साझा किए।

## दिनांक 21.05.2018

**पहले और दूसरे सत्र** में महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के सम-कुलपति, प्रो. आनंदवर्धन शर्मा ने प्रतिभागियों के बीच 'दृश्य साधन' (विजुअल एड्स) विषय पर विस्तृत व्याख्यान दिया। उन्होंने अपने व्याख्यान के शुरुआत में कहा कि नॉन वर्बल कम्यूनिकेशन के जो उदाहरण आप देखते हैं, उनमें कोई शब्द नहीं होते। उसमें व्यक्ति-चित्र की अलग-अलग

भंगिमाएँ होती हैं। हम कुछ समय बोलते हैं लेकिन उसमें अधिकतम अभिव्यक्ति हमारी भंगिमाओं में प्रकट होती है। नाटक में जब हम कोई पात्र देखते हैं, तो उसे अलग-अलग अभिनय दृश्यों में हम पहचान लेते हैं और उसकी अनुभूति करते हैं। जब हम कोई नाटक या फिल्म देखते हैं तो पूरी एक कथा चलती है। उस कथा में आप को पता होता है कि किस वजह से यह घटना घटी है, किन्तु नॉन वर्बल कम्युनिकेशन में जिसमें केवल स्थिर चित्र हों और उसके बारे में प्रत्येक व्यक्ति को एक कहानी लिखने को कही जाए तो तय है कि सबकी कहानी अलग-अलग होगी। इस व्याख्या को उन्होंने कुछ बेहतरीन साहित्यिक उद्धरणों से जैसे अज्ञेय की कविता 'असाध्य वीणा' से जोड़ कर भी समझाया। इस तरह अपने विस्तृत व्याख्यान में उन्होंने दृश्य साधनों में मनोविज्ञान की भूमिका को रेखांकित करते हुए उच्च शिक्षा को शिक्षण कौशल से जोड़ते हुए प्रतिभागियों को अत्यंत आवश्यक जानकारी दी।

**तृतीय और चतुर्थ सत्र** में इलाहाबाद से पधारे विशिष्ट शिक्षाविद **प्रो. पी. के. साहू** ने **'उच्चतर शिक्षा में शैक्षणिक नवाचार'** विषय पर व्याख्यान देते हुए प्रतिभागियों से परिचर्चा की। डॉ. साहू ने शिक्षण निदर्श (Teaching Model) की रूपरेखा पर चर्चा करते हुए अपने व्याख्यान की शुरुआत की। शिक्षण के लिए जो आवश्यक तत्व हैं उनमें सीखने का परिवेश, विषयवस्तु, उद्देश्य, संचार के संसाधन तथा शिक्षक का व्यवहार अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। लेकिन शिक्षण अपने किस निष्कर्ष तक पहुँचता है, यह हमारी सबसे बड़ी चुनौती है। डॉ. साहू ने शिक्षण के निष्कर्ष पर बल देते हुए कहा कि यही वह खजाना है जहां पहुँचना शिक्षण का मूलभूत उद्देश्य है। आगे उन्होंने उच्चतर शिक्षा पर परिचर्चा को केन्द्रित कर अध्यापक के अध्यापन का

अभिविन्यास पाठ्यक्रम के दौरान प्रतिभागियों के लिए समूह गतिविधि का निर्देशन करते हुए मा. प्रतिकुलपति, प्रो. आनंद वर्धन शर्मा, पाठ्यक्रम समन्वयक, डॉ. शिरीष पाल सिंह, रिसर्च एशोसिएट, डॉ. संजय कुमार तिवारी तथा प्रतिभागीगण।

मूल्यांकन के संदर्भ में बताया कि अध्यापन का मूल्यांकन शिक्षण की एक उपयोगी कसौटी है। इसके निष्कर्ष के फलस्वरूप अध्यापक के व्यवहार में जरूरी परिवर्तन आते हैं और सीखने वाले को कुछ अधिक लाभ मिलता है। इससे शिक्षण में जो कमियाँ पाई जाती हैं उन्हें दूर किया जा सकता है। शिक्षण पुराने अनुभवों के साथ नए ज्ञान की ओर उन्मुख होता है तथा सृजना त्मक कौशल का विकास भी इससे संभव होता है। इस मूल्यांकन का सबसे जरूरी काम यह होता ही कि शिक्षण अपने लक्ष्य तक पहुँच जाता है।

**दिनांक 22.05.2018**

**प्रथम और द्वितीय सत्र** में आर. आई. ई. – एन. सी. ई. आर. टी., भोपाल से पधारीं **प्रोफेसर रत्नमाला** आर्य ने **'शिक्षा में लैंगिक मुद्दा'** और **'शांति एवं मानवाधिकार शिक्षा'** विषयों पर अपने व्याख्यान दिए। उन्होंने बताया कि समय के अनुसार शिक्षा में भी बहुत से परिवर्तन आए हैं। इन परिवर्तनों से एक संवेदनशील समाज निर्मित हुआ है। इस संवेदनशीलता के विविध पहलुओं में एक महत्वपूर्ण मुद्दा लैंगिकता का है। लैंगिकता के आधार पर श्रेष्ठ और निम्न का बटवारा हमारे पिछड़े पन का परिचायक रहा है। आज हमें लैंगिक भेद-भाव के प्रति सजग रहना ही होगा तभी हम शिक्षा और अपने सिस्टम के प्रति न्याय कर पाएंगे। शांति और मानवाधिकार विषय पर बोलते हुए उन्होंने विश्व दृष्टि विकसित करने की आवश्यकता को जरूरी बताया। उन्होंने इस दिशा में काम कर रहीं राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं के बारे में विस्तार से प्रतिभागियों से विचार -विमर्श किया।

**तृतीय और चतुर्थ सत्र** महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय , वर्धा के माननीय कुलपति, प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने 'संस्कृति, भाषा और मन' जैसे गंभीर विषय पर व्यवस्थित एवं विस्तृत व्याख्यान से प्रतिभागियों को लाभान्वित किया। प्रो. मिश्र ने इस विषय पर बात करते हुए कहा कि यह अपने में तीन अलग-अलग जटिल विषय हैं जिन पर ज्ञान और दर्शन की दुनिया में बहुत विचार-विमर्श हुआ है। उन्होंने संस्कृति की संरचना पर गहन चर्चा करते हुए उसकी परिभाषिकता के विविध आयामों की ओर लोगों का ध्यान आकृष्ट किया। संस्कृति अपने आप में बहुत व्यापक विस्तार लिए हुए है। उसमें भौतिक से लेकर चिंतन और धर्म तक सब कुछ आता है। उन्होंने कहा यह बड़ी मजेदार बात है कि मनुष्य पहले संस्कृति रचता है और संस्कृति फिर उसे

पर्यावरणविद डॉ. राजाराम त्रिपाठी को सम्मानित करते हुए मा. कुलपति, प्रो. गिरीश्वर मिश्र साथ में प्रतिकुलपति, प्रो. आनंद वर्धन शर्मा व अन्य अतिथिगण।

रचती है। सामान्यतः बहुत मोटे तौर पर संस्कृति को अपनी सुविधानुसार हम बांट लेते हैं- भारतीय संस्कृति और पश्चिमी संस्कृति। लेकिन सिर्फ ऐसा ही नहीं है, संस्कृतियों के उद्भव, विकास और पतन के इतिहास को ठीक से जानने से बहुत सी ऐसी चीजें मिलेंगी जिससे यह बटवारा बहुत हल्का लगेगा। संस्कृति के संदर्भ में उन्होंने भाषा की महती भूमिका की ओर लोगों को ध्यान दिलाया जिसमें उन्होंने तमाम संस्कृतियों की विविध भाषा पर चर्चा की। संस्कृति हमारे भावों, विचारों और संकेतों को प्रभावित

करती है। इसी तरह उन्होंने भाषा को सांस्कृतिक गहराई तलाशा तथा मन को मानव व्यवहार और मनोविज्ञान के भीतर परिभाषिकता में खंगालते हुए जरूरी बातें तथ्यात्मक तरीके से प्रतिभागियों से साझा की।

## दिनांक 23.05.2018

**प्रथम एवं द्वितीय सत्र** में एन.सी.ई.आर.टी. के पूर्व प्रोफेसर **एस. के. यादव** ने **'शिक्षकों के लिए कार्य निष्पादन संकेतक'** और **'सूक्ष्म शिक्षण मूल्यांकन'** विषयों पर अपने व्याख्यान प्रस्तुत किए। पहले विषय पर प्रो. यादव ने शिक्षक के कार्य क्षेत्र और उसके अधिकार के बारे में बताते हुए अपनी बात प्रारम्भ की। एक शिक्षक को अपने कार्य निष्पादन में किस तरह कुशल होना चाहिए? उसे किस तरह सावधानी बरतने की आवश्यकता होती है? इस तरफ उन्होंने प्रतिभागियों का ध्यान आकृष्ट किया। दूसरे सत्र में उन्होंने 'सूक्ष्म शिक्षण मूल्यांकन' विषय पर विचार-विमर्श किया। इसके अंतर्गत सूक्ष्म शिक्षण क्या होता, उसकी उपयोगिता और प्रभावशीलता आदि मुद्दों पर उन्होंने विस्तार से अपने व्याख्यान में परिचर्चा की।

**तृतीय सत्र** में महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के फ्यूजी गुरूजी समाजकार्य विभाग के आचार्य प्रो. मनोज कुमार ने 'गांधी और गांधीवाद की मीमांसा' विषय पर अपना व्याख्यान दिया। उन्होंने आज के समय और समाज में गांधीवाद की प्रासंगिकता पर बहुत जरूरी बातें कहीं। उन्होंने सामाजिक संदर्भ में संस्कृति की चर्चा करते हुए विचारधाराओं के मूल्यांकन की आवश्यकता पर विचार-विमर्श किया। गांधी के समय का भारत और आज के भारत में गांधी की भूमिका की ओर इशारा करते हुए उन्होंने कई महत्वपूर्ण बातें कीं। उन्होंने कहा कि गांधी शिक्षा द्वारा चरित्र निर्माण पर बल देते थे, जो आज के समय में बहुत प्रासंगिक है। चतुर्थ सत्र में प्रो. एस. के. यादव के निर्देशन में प्रतिभागियों ने सूक्ष्म शिक्षण का प्रयोगात्मक प्रस्तुतीकरण किया। जिसका मूल्यांकन प्रो. यादव ने किया।

## दिनांक 24.05.2018

इस दिन के **प्रथम सत्र** में यूजीसी- मानव संसाधन विकास केंद्र, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर के निदेशक, **प्रो. कमलेश मिश्र** ने 'सूक्ष्म शिक्षण मूल्यांकन' पर अपना वक्तव्य दिया। उन्होंने सूक्ष्म शिक्षण के संदर्भ के लिए पाठ योजना को कैसे तैयार करें? उसमें किस तरह से उपयोगी सामग्री लें? तथा प्रस्तुतीकरण कैसा हो ? इन बातों पर बल देते हुए गंभीर विचार-विमर्श से प्रतिभागियों को लाभान्वित किया। **दूसरे सत्र** में उन्होंने प्रतिभागियों से प्रयोग के तौर पर अभ्यास का मूल्यांकन किया।

**तीसरे सत्र** में **डॉ. शिरीष पाल सिंह** ने शोध लेखन और प्रकाशन के संबंध में नई तकनीकों की समसामयिक उपयोगिता को रेखांकित करते हुए गूगल स्कालर्स और गूगल अकाउंट के प्रासंगिकता की चर्चा की तथा गुणात्मक शोध की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने यह बताया कि गूगल एकाउंट पर तो हम अभी इनिशियल प्रोसेस में हैं, अभी भी हम यह जानने की कोशिश कर रहे हैं कि क्या रोल है गूगल स्कॉलर का, क्या रोल है गूगल स्कॉलर के एकाउंट का आप के क्वालिटी आउटपुट में। अत: हमें अपनी क्वालिटी आउटपुट के स्तर को अच्छे शोध के जरिये बढ़ाना होगा। **चतुर्थ सत्र** में महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा विश्वविद्यालय के कार्यकारी कुलसचिव, **श्री कादर नवाज खान** ने एल. टी. सी. के नियमों पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया।

## दिनांक 25.05.2018

**प्रथम सत्र** में वनस्थली विद्यापीठ के शिक्षा विभाग के **प्रो. अजय सुराना** ने **'विद्यार्थियों के अधिगम की रिपोर्टिंग - ग्रेडिंग'** विषय पर अपना व्याख्यान दिया। विद्यार्थियों के अधिगम विवरण को रिपोर्ट अथवा श्रेणीकरण (Grading) के माध्यम से ही क्यों प्रस्तुत किया जाए? ग्रेडिंग की शुरुआत कब और कैसे हुई? रिपोर्टिंग अथवा ग्रेडिंग क्यों होती हैं? इसकी क्या

आवश्यकता है? इसके क्या लाभ हैं? और रिपोर्टिंग में अंक ही क्यों दिया जाता है? आदि विषयों पर उन्होंने बात की। अपनी इस चर्चा में उन्होंने बताया की श्रेणीकरण (Grading) का मापन क्यों और कैसे किया जाता है किसी रिपोर्टिंग में इसकी क्या आवश्यकता है। प्रो. सुरना ने श्रेणीकरण (Grading) से संबन्धित विभिन्न शब्दों जैसे CGPA, GP आदि को ग्रेडिंग टेबल के माध्यम से प्रतिभागियों को इसके विषय में विस्तार से बताया। सभी प्रतिभागी उनकी इस चर्चा से बहुत लाभान्वित हुए। **द्वितीय सत्र** में प्रो. सुराना ने ही 'प्रायोगिक कार्य' विषय पर प्रतिभागियों से परिचर्चा की।

**तृतीय सत्र** में एन.सी.ई.आर.टी., दिल्ली से आए **प्रो. वी. पी. सिंह**, ने **डेवलपमेंट ऑफ आइटम बैंक** विषय पर चर्चा की। इस विषय के अंतर्गत उन्होंने तीन बिन्दुओं पर चर्चा की जैसे - आइटम बैंक क्या है ? प्रश्नपत्र बनाने में आइटम बैंक की क्यों अवश्यकता होती है ? और आइटम बैंक कैसे बनाया जाए ? इस दौरान उन्होंने बताया कि प्रश्नपत्र बनाने में हमें किस प्रकार के तथ्यों को ध्यान में रखना चाहिए? जिससे की विद्यार्थियों के ज्ञान और व्यवहार में वृद्धि प्राप्त हो सके। अपनी इस चर्चा में उन्होंने प्रश्नपत्र के विभिन्न पहलुओं पर विस्तार से प्रतिभागियों से अपने विचारों का आदान-प्रदान किया। उनकी इस परिचर्चा से प्रतिभागियों को प्रश्नपत्र संबंधी कई बिन्दुओं को जानने और समझने का अवसर प्राप्त हुआ जिससे सभी प्रतिभागी काफी लाभान्वित हुए। **चतुर्थ सत्र** में प्रो. सिंह ने ही प्रश्नपत्र बैंकों के विकास की दिशा पर प्रकाश डाला और उससे हो रहे लाभ तथा आवश्यकता पर बातचीत की।

पाठ्यक्रम के दौरान विशेषज्ञ व्याख्यान देते हुए प्रो. वी. पी. सिंह एवं प्रतिभागीगण।

## दिनांक 26.05.2018

**प्रथम सत्र** में एन.सी.ई.आर.टी. भोपाल सेंटर से आए **प्रो. नित्यानन्द प्रधान** ने **'शिक्षक अध्यापन: अधिगम के लिए शिक्षण'** विषय पर व्याख्यान दिया और शिक्षण संबंधी विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की। अपनी इस परिचर्चा में उन्होंने शिक्षण संबंधी कई बिन्दुओं जैसे शिक्षण संकल्पना, शिक्षण की बदलती अवधारणा, अधिगम की बदलती अवधारणा, शिक्षण का तरीका और सीखने के तरीकों और निर्देशों पर विस्तार से चर्चा की। **द्वितीय सत्र** में भी प्रो. प्रधान ने ही अपने विषय को विस्तार देते हुए अधिगम और शिक्षण से जुड़े गंभीर सवालों पर परिचर्चा की।

**तृतीय सत्र** में **प्रो. अजय सुराना** ने **'मानक संदर्भित ग्रेडिंग-प्रतिशतांक'** विषय पर व्याख्यान दिया। इस विषय पर बात करते हुए प्रो. सुराना ने बताया कुछ संस्थान प्रतिशतांक तो कुछ ग्रेडिंग पद्धति को अपनाते हैं जिससे मानकीकृत व्यवस्था में बाधा पड़ती है। इसके लिए एनसीईआरटी और यूजीसी ने जो मानक बनाए हैं उसे प्रत्येक जगह ठीक से लागू करने की व्यवस्था की जानी चाहिए।

**चतुर्थ सत्र** में महात्मा गांधी आयुर्विज्ञान संस्थान, सेवाग्राम के मेडिसिन विभाग के **प्रो. उल्हास जाजू** ने **'सामाजिक प्रश्नों की समग्रता'** विषय पर अपना व्याख्यान दिया। स्वास्थ्य और समाज से जुड़ी दैनिक दिनचर्या के विविध पहलुओं पर बातचीत करते हुए उन्होंने विभिन्न समाजों की समस्याओं पर बहुत गंभीर बिंदुओं को रेखांकित किया। उन्होंने बहुत सजगता से सवाल तलाशे और सतर्कता से उसके समाधान की ओर इशारा किया।

## दिनांक 28.05.2018

**प्रथम सत्र** की शुरुआत पुणे से आए **प्रो. संजीव सोनवाने** ने **'ज्ञान का सृजन और शोध द्वारा सिद्धांतों का विनिर्माण'** विषय पर व्याख्यान दिया। इस विषय के अंतर्गत प्रो. सोनवाने ने उच्च शिक्षा में ज्ञान (शिक्षा) के विभिन्न पहलुओं को अपने विचार द्वारा प्रतिभागियों के समक्ष प्रस्तुत किया और प्रतिभागियों ने भी ज्ञान से संबन्धित समस्त जानकारी को अपने-अपने स्तर से एक दूसरे से साझा किया।

**द्वितीय सत्र** में महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग के आचार्य, प्रो. अवधेश कुमार जी ने 'प्रबंधन और जीवन नियोजन' विषय पर प्रतिभागियों के समक्ष अपने विचार प्रस्तुत किए। इस विषय के अंतर्गत उन्होंने बताया कि 21वीं सदीं में जीवन को समायोजित रूप से संचालित करने के लिए हमें आर्थिक रूप से उदार होना चाहिए और प्रबंधन का अच्छा ज्ञान होना चाहिए।

**तृतीय सत्र** में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के समाजशास्त्र विभाग के प्रो. अरविंद कुमार जोशी ने 'भारत में वरिष्ठ नागरिक : समस्या और समाधान' विषय पर अपने विचार प्रतिभागियों के सामने प्रस्तुत किए। इसके अंतर्गत उन्होंने बताया कि समाज में रहने वाले लोग कैसे अपने माता-पिता को एक अवस्था (वृद्धावस्था) में अपने आप से दूर रखना चाहते हैं, जो वरिष्ठ नागरिकों के लिए एक गंभीर समस्या है और हमें इस समस्या का समाधान ढूढ़ना होगा। समाज में वरिष्ठ नागरिकों के साथ होने वाली विभिन्न घटनाओं पर प्रो. जोशी ने विस्तार पूर्वक प्रतिभागियों से चर्चा की और उन्होंने इस प्रकार होने वाली तमाम अप्रिय घटनाओं को दूर करने के उपाय भी बताए।

## दिनांक 29.05.2018

**प्रथम सत्र** में शुरुआत बरकतुल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल के मनोविज्ञान विभाग के प्रो. कैलाश नाथ त्रिपाठी ने अपने व्याख्यान में बताया कि स्व क्या है और इसका विकास कैसे किया जाए ? साथ ही हमारे अंदर की अभिवृत्तियों का विकास कैसे और कैसा होना चाहिए ? जिससे कि हम अपने उद्देश्य की पूर्ति कर सकें। उनका अभिमत था कि स्वयं के विषय में जो मान्यताओं का संग्रह है उसी से स्व का निर्माण होता है। मनुष्य की मान्यताएँ उसके विचार, सोच, प्रत्याशा और लक्ष्य का संग्रह होता है। सकारात्मक विचार और व्यवहार के द्वारा ही हमें अपने लक्ष्यों की प्राप्ति हो सकती है।

**द्वितीय सत्र** में महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के कुलपति, **प्रो.गिरीश्वर मिश्र** ने **'भारतीय ज्ञानमीमांसा : प्रमाण विमर्श'** विषय पर अपने व्याख्यान से प्रतिभागियों को लाभान्वित किया। उन्होंने बताया कि भारत में

ज्ञान विमर्श बहुत विशाल है। वैसे तो प्रत्येक समाज में ज्ञान की आवश्यकता होती है किंतु ज्ञान का स्रोत, सीमा, वैधता व प्रामाणिकता आदि को लेकर एक विशद विमर्श भारतीय ज्ञानमीमांसा में दृष्टिगोचर होता है। उन्होंने ज्ञान के संबंध में भारतीय दृष्टिकोण, सोचने का भारतीय तरीका, भारतीय दर्शन के निकाय, ज्ञान के स्वरूप, ज्ञान प्राप्ति संबंधित समस्याओं के समाधान की पद्धति आदि को विस्तार से समझाया। उन्होंने कहा कि ज्ञान प्राप्त करने की कोशिश तत्संबंधित समस्याओं के समाधान के लिए होता है और ज्ञान प्राप्ति के साथ ही समस्या तिरोहित हो जाती है साथ ही व्यक्ति में गुणात्मक परिवर्तन परिलक्षित होता है। अत: हमें वाद, जल्प, वितण्डा आदि को दरकिनार करते हुए प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, उपमान, अनुपलब्धि एवं अर्थापत्ति इत्यादि के द्वारा प्रामाणिक ज्ञान प्राप्त करना चाहिए और यही भारतीय ज्ञानमीमांसा का अभीष्ट है।

उन्होंने ज्ञान की प्राप्ति से संबंधित चार्वाक, जैन, बौद्ध, सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा एवं वेदांत दर्शनों में प्रतिपादित विचारों को साझा किया। प्रमाण-प्रमेय व्यवहार पर चर्चा करते हुए उन्होंने ज्ञाता, ज्ञान और ज्ञेय के अंतरसंबंधो की संक्षिप्त विवेचना करते हुए कहा कि यथार्थ एवं वैध ज्ञान न केवल सैद्धांतिक अपितु अर्थ क्रियाकारी होना चाहिए, उसमें नवीनता होनी चाहिए। उसे अबाधित, सुस्पष्ट, संदेहरहित तथा तार्किक होना चाहिए और उसकी प्रामाणिकता अक्षुण्ण रहनी चाहिए।

**तृतीय सत्र** में बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय के **प्रो. के. एन. त्रिपाठी** ने **'संगठनात्मक परिवर्तन'** विषय पर सारगर्भित व्याख्या से सभी को लाभान्वित किया। उन्होंने मानव व्यवहार तथा व्यक्ति के विकास के परिप्रेक्ष्य में संगठनात्मक परिवर्तन की भूमिका एवं उसके ढाँचे की पड़ताल की।

**चतुर्थ सत्र** में **प्रो. एच. बी. गुप्त**, आचार्य, अर्थशास्त्र उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान, भोपाल ने प्रतिभागियों के बीच समूह गतिविधियों को संचालित करते हुए उनका मूल्यांकन किया।

## दिनांक 30.05.2018

**प्रथम सत्र** में प्रो. कृपा शंकर चौबे, प्रभारी, क्षेत्रीय केंद्र, कोलकाता, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय ने 'मीडिया और सत्ता' विषय पर अपना व्याख्यान दिया। अपने उद्बोधन में उन्होंने मीडिया का तात्पर्य, उसकी उत्पत्ति के आधार, उसका इतिहास और समय के साथ उसके विकास पर तथ्यपरक ढंग से प्रकाश डाला तथा सत्ता, उसकी प्रकृति, उसका चरित्र, उसकी कार्यप्रणाली एवं प्रशासनिक स्वरूप आदि की समीक्षा करते हुए मीडिया और सत्ता के अंतर्संबंधों की विवेचना की तथा प्रतिभागियों की जिज्ञासाओं एवं प्रश्नों का समाधान किया।

**द्वितीय सत्र** में **भारत में सामाजिक न्याय व्यवस्था** विषय पर दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर के राजनीति विज्ञान के अवकाश प्राप्त आचार्य, **प्रो. इन्द्रदेव मिश्र** का व्याख्यान हुआ। अपने वक्तव्य में उन्होंने भारत में प्राचीन काल से लेकर अद्यतन सामाजिक संरचना पर विस्तृत प्रकाश डाला। सामाजिक न्याय से संबंधित सम्प्रत्ययों, व्यक्ति, कुटुम्ब, समाज, राज्य, राष्ट्र आदि के साथ ही लिंग, जाति, धर्म, वर्ण एवं आश्रम व्यवस्था आदि की विश्लेषणात्मक विवेचना की तथा प्रतिभागियों के प्रश्नों तथा शंकाओं का सारगर्भित समाधान दिया।

## दिनांक 31.05.2018

**प्रथम एवं द्वितीय सत्र** में देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर के अवकाश प्राप्त अधिष्ठाता **प्रो. डी. एन. सनसनवाल** ने 'शोध पद्धति' विषय पर संश्लेषणात्मक व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने शोध की महत्ता, प्रकृति, उसके विविध आयामों, प्रक्रिया, पद्धति, उद्देश्य, लक्ष्य तथा शोध का इतिहास व विकास इत्यादि की बहुत ही रोचक ढंग से गहन समीक्षा की तथा प्रतिभागियों को शोध के प्रति उन्मुख करने की कोशिश की।

**तृतीय सत्र** में दयालबाग शैक्षिक संस्थान, आगरा के आचार्य, प्रो. के. सी. वशिष्ठ ने 'यंत्र निर्माण'(Tool Constructions) विषय पर अपने सारगर्भित व्याख्यान में यंत्र निर्माण का उद्देश्य, प्रक्रिया, महत्ता तथा उसकी उपयोगिता के बारे में विश्लेषणात्मक समीक्षा की।

**दिनांक 31.05.2018** के **चतुर्थ सत्र** तथा **दिनांक 01.06.2018** के **प्रथम सत्र** में पर्यावरणविद् तथा माँ दतेश्वरी हर्बल समूह, छत्तीसगढ़ के प्रमुख डॉ. राजाराम त्रिपाठी ने विषय-विशेषज्ञ के रूप में 'पर्यावरण संरक्षण का महत्व' विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि पर्यावरण की उपयोगिता भारतीय सभ्यता और संस्कृति में अतिप्राचीन काल से स्वीकार की जाती रही है जिसका मुखर स्वर वैदिक वांगमय में दृष्टिगोचर होता है। किंतु दुर्भाग्य से कालांतर में भारत सहित विश्व जनमानस पर्यावरण की महत्ता के प्रति उदासीन होता गया और उसका अंधाधुंध दोहन करता गया। परिणाम स्वरूप आज स्थिति अत्यंत भयावह हो गई है और सकल विश्व के लिए संकट खड़ा हो गया है। इसलिए वैश्विक धरातल पर पर्यावरण के प्रति जागरूकता तथा उसका संरक्षण अनिवार्य हो गया है। यदि वैश्विक जीवन और उसकी विविधता की रक्षा करनी है तो पर्यावरण की रक्षा करनी होगी वरना समूल जीवन तबाह हो जाएगा। अत: वैश्विक जनमानस को मिलकर पर्यावरण प्रदूषण को रोकना होगा और जल संरक्षण, वायु संरक्षण, मृदा संरक्षण, वनस्पति संरक्षण तथा जैव संरक्षण हेतु वहुआयामी कार्यक्रमों तथा उपक्रमों को द्रूत गति से क्रियान्वित करना होगा तभी पर्यावरण की रक्षा हो सकेगी और पारिस्थितिकी संतुलन बना रह सकेगा।

## दिनांक 01.06.2018

**द्वितीय सत्र** में महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के कुलपति, **प्रो. गिरीश्वर मिश्र** ने विषय-विशेषज्ञ के रूप में '**आनंद अथवा प्रसन्नता का मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य**' विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने इमाईल दुर्खीम को उद्धृत करते हुए प्रश्न उठाया कि क्या मनुष्य के विकास के साथ उसकी प्रसन्नता में अभिवृद्धि हो रही है ? पुन: रूसो को उद्धृत करते हुए बताया कि प्रकृति के विकास के आधार पर आनंद की गणना नहीं की जा सकती।

अपने व्याख्यान में उन्होंने स्थापित किया कि जब आत्मा समृद्ध, दिमाग शांत और चित्त स्थिर व संतुलित रहता है वह स्थिति ही आनंद की सर्वोत्तम अवस्था होती है। शारीरिक सहित किसी भी प्रकार की बाधा से मुक्त स्थिति प्रसन्नता प्रदान करती है। इस प्रकार हम देखते है कि आनंद अथवा प्रसन्नता विविध आयामी है। सुश्रुत संहिता यह बताती है कि आत्मा, मन व ज्ञानेन्द्रिय इन तीनों की आनंदमय अवस्था सर्वोत्तम स्वास्थ्य की स्थिति है और इन तीनों स्तरों पर स्वस्थ होने का अटूट हिस्सा है आनंद आनंद राग रहित, द्वेष रहित तथा घृणा रहित शांति की स्थिति का दूसरा नाम है। आनंद समत्व भाव अथवा संतुलित अवस्था है। आनंद से परिपूर्ण व्यक्ति ही ब्रह्म की स्थिति तक पहुँच सकता है।

प्रसन्नता अथवा सुख की प्रवृति अनुकूलता में दिखती है। सुख की अनुभूति मानसिक फलन है और मन की यह अद्भुत विशेषता है कि वह इच्छानुसार वर्तमान, अतीत और भविष्य में विचरण कर सकता है। कुछ विद्वान मानते हैं कि इच्छा रहित स्थिति दु:ख रहित होने की अनिवार्य शर्त है। यदि व्यक्ति को सुखी अथवा प्रसन्न रहना है तो उसे ममत्व का परित्याग करना चाहिए क्योंकि यह दु:खों का कारण है। वस्तुतः सामान्य व्यक्ति आसक्त रहता है। योग वाशिष्ट हमें बताता है कि कैसे अनासक्त भाव में रहते हुए जीवन मुक्त होकर सुखी रहा जा सकता है। विद्वानों का अभिमत है कि हमें 'प्रेय', जो अच्छा लगता है किंतु जरूरी नहीं कि वह अच्छा ही हो, के स्थान पर 'श्रेय' जो वस्तुत: अच्छा ही होता है, का अनुशीलन करना चाहिए।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विद्वानों का निष्कर्ष है कि सफलता से आनंद की प्राप्ति होती है और आनंद से सफलता मिलती है। नकारात्मकता व्यक्ति को न तो सफल होने देती है और न ही प्रसन्न। अत: प्रसन्नता के लिए व्यक्ति को नकारात्मकता का परित्याग कर देना चाहिए। घटनाएं, परिस्थितियां, भावात्मक प्रतिक्रियाएं, संवेदनों की स्मृति तथा वैश्विक निर्णय की स्थिति आदि

हमारी प्रसन्नता-अप्रसन्नता को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करती हैं। इसके साथ ही प्रामाणिकता, भाव, भागीदारी, योग्यता, क्षमता, सृजनात्मकता, आत्म संतुष्टि, अच्छी सोच के साथ प्रतिरोध की क्षमता इत्यादि भी प्रसन्नता की निर्धारक होती है।

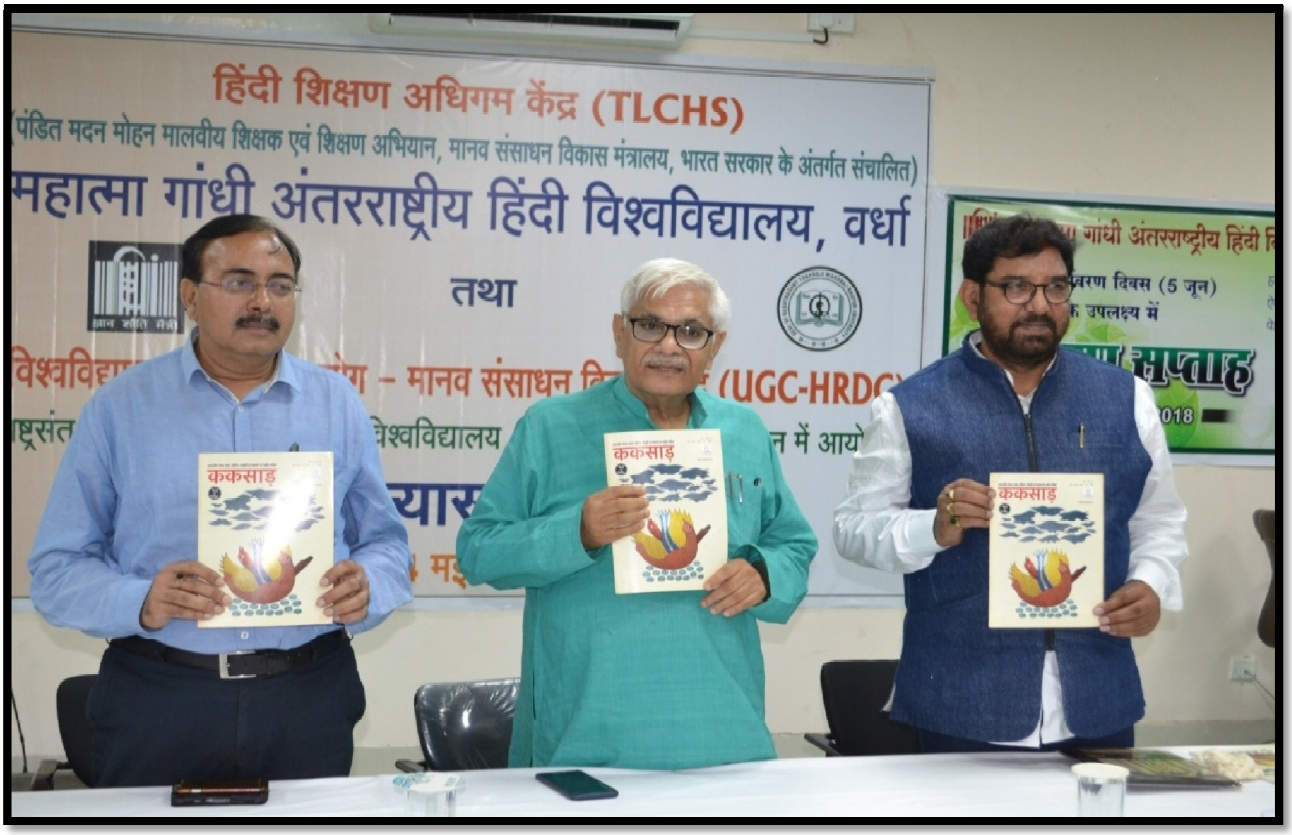


अभिविन्यास पाठ्यक्रम में विशेषज्ञ के रूप उपस्थित डॉ. राजाराम त्रिपाठी की मासिक पत्रिका के नवीन अंक का लोकार्पण करते हुए मा. कुलपति, प्रो. गिरीश्वर मिश्र एवं प्रतिकुलपति, प्रो. आनंद वर्धन शर्मा।

उन्होंने तैतरीय उपनिषद में वर्णित अन्नमय कोश, प्राणमय कोश, मनोमय कोश, विज्ञानमय कोश तथा आनंदमय कोश के आधार पर अस्तित्त्व के बहुस्तरीय स्वरूप की चर्चा की तथा बताया कि भारतीय दर्शन के निकायों में प्रतिपादित सिद्धांतों के अनुशीलन एवं अनुपालन से सम्यक आनंद की प्राप्ति की जा सकती है। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय स्तर के कुछ विद्वानों के कुछ शोध निष्कर्षों के आधार पर यह भी बताया कि सफलता और प्रसन्नता के निर्धारण में पचास प्रतिशत भूमिका प्राकृतिक अथवा जैविकीय अथवा आनुवांशिक होती है। चालीस प्रतिशत हमारे कर्मों व विचारों पर आधारित होती है और शेष दस प्रतिशत परिस्थिति निर्धारित करती है।

**तृतीय एवं चतुर्थ सत्र**में काशी हिन्दू विश्वविद्यालया, वाराणसी के उप पुस्तकलायाध्यक्ष **डॉ. संजीव सर्राफ़** ने **'शोध पत्र लेखन और सूचना तकनीक की भूमिका'** विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने शोधपत्र लेखन के आधारभूत तत्वों की चर्चा करते हुए आधुनिक समय में सूचना तकनीक के विभिन्न स्वरूपों को उपयोग में लाते हुए बेहतर आलेख तैयार करने की वकालत की। उन्होंने यह भी बताया कि कैसे शोध आलेख को संक्षिप्त सारगर्भित, प्रामाणिक और मौलिक स्वरूप देने में सूचना तकनीक का प्रयोग किया जा सकता है और उसे अध्येताओं सहित आम जन मानस के बीच प्रवाहित किया जा सकता है।

**दिनांक 02.06.2018**

दिनांक 02.06.2018 के **प्रथम एवं द्वितीय सत्र** में उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान, भोपाल के भौतिकी के **प्रोफेसर अनुज हुंडैत** ने **'प्रस्तुति कौशल'** विषय पर अपने उद्बोधन में प्रतिभागियों को सर्वोत्तम अभिव्यक्ति के आधारभूत गुर सिखाए। उन्होंने पॉवर पॉइंट प्रजेंटेशन को जीवंत और प्रभावी बनाने में एनीमेशन के उपयोग को रेखांकित किया।

**तृतीय सत्र** में उन्होंने विज्ञान विषय से संबंधित प्रतिभागियों की प्रस्तुति का मूल्यांकन कार्य किया। **चतुर्थ सत्र** में महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति प्रो. आनंद वर्धन शर्मा ने प्रतिभागियों के समक्ष प्रख्यात गांधीवादी विचारक एवं सामाजिक कार्यकर्ता श्री एस. एन. सुब्बा राव के जीवन पर आधारित लघु फिल्म की प्रस्तुतिकरण के माध्यम से व्यक्तित्व एवं विकास संवर्धन प्रेरित किया और उनकेजीवन से सीख लेने की प्रेरणा दी।

**दिनांक 04.06.2018**

दिनांक 04.06.2018 के **प्रथम एवं द्वितीय सत्र** में इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक के शिक्षा संकाय की अधिष्ठाता **प्रो. संध्या गीहर** द्वारा शिक्षा शास्त्र विषय के प्रतिभागियों की प्रस्तुतिकरण का मूल्यांकन किया गया। **तृतीय एवं चतुर्थ सत्र** में पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ के विवेकानंद अध्ययन केंद्र से आईं **प्रो. नन्दिता शुक्ला सिंह** ने **'विवेकानंद के विचार तथा मूल्यपरक शिक्षा'** पर अपने उद्बोधन में यह प्रतिपादित किया कि विवेकानंद मानवता के पुजारी थे, उनका जीवन और विचार मनुष्यता के जीवन की पराकाष्ठा है तथा शिक्षा को मूल्यपरक होने की प्रेरणा देता है।

**दिनांक 05.06.2018**

दिनांक 05.06.2018 के **प्रथम सत्र** में साहित्यकार तथा महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय के पूर्व आवासीय लेखक **डॉ. दामोदर खडसे** ने **'हिंदी एवं मराठी का अंतर्संबंध: मराठी के विशेष संदर्भ में'** विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किए। उन्होंने बताया हिंदी और मराठी एक ही कोख से पैदा हुई भाषाएँ हैं, दोनों की लिपि देवनागरी है। इसलिए भी दोनों में साहित्यिक समानताओं के सरोकार दिखाई देते हैं। भक्तिकाल से लेकर आज के साहित्यिक संदर्भ में दोनों की आवाजाही लगातार रही है।

**द्वितीय सत्र** में राजकीय एम. एल. बी. महिला पी.जी. कॉलेज वाणिज्य विभाग के **प्रो. बी.एम.एस. भदौरिया** द्वारा समाज विज्ञान विषयों से संबंधित प्रतिभागियों की प्रस्तुतिक्करण का मूल्यांकन किया गया। **तृतीय एवं चतुर्थ सत्र**में शासकीय हमीदिया कला वाणिज्य स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भोपाल के राजनीति विज्ञान विभाग की एसोसिएट प्रोफेसर **डॉ. भावना भदौरिया** द्वारा समाज विज्ञान विषयों से संबंधित प्रतिभागियों की प्रस्तुतिक्करण का मूल्यांकन किया गया।

**दिनांक 06.06.2018**

दिनांक 06.06.2018 के **प्रथम सत्र** में महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के पत्रकारिता एवं जनसंचार विद्यापीठ के अधिष्ठाता **प्रो. अनिल कुमार राय** ने **'अध्यापन एवं कौशल विकास के लिए मीडिया'** विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि मीडिया के विभिन्न आयामों के अनुप्रयोग द्वारा अध्यापन को प्रभावी बनाया जा सकता है साथ ही व्यक्ति में अंतर्निहित कौशल को अभिव्यक्ति प्रदान करने में मीडिया महती भूमिका का निर्वहन करती है।

**द्वितीय सत्र** में राष्ट्रसंत तुकड़ोजी महाराज नागपुर विश्वविद्यालय से आई **प्रो. वीणा दाढ़े** ने 'हिंदी साहित्य की विविध विधाएँ' विषय पर प्रतिभागियों को संबोधित किया। अपने उद्बोधन में उन्होंने हिंदी साहित्य की उत्पत्ति एवं विकास की चर्चा करते

हुए कविता, कहानी, नाटक एवं उपन्यास तथा अन्य विधाओं के महत्व को रखांकित करते हुए साहित्य की समाज में महती भूमिका को आवश्यक बताया। भोजनावकाश के उपरांत प्रतिभागियों को महात्मा गांधी अंतरारराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा के मीडिया लैब संग्रहालय तथा केंद्रीय पुस्तकालय का भ्रमण कराया गया।

## दिनांक 07.06.2018

दिनांक 07.06.2018 के **प्रथम सत्र** में महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग के अध्यक्ष, **प्रो. कृष्ण कुमार सिंह** ने साहित्य और समाज विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। प्रो. सिंह ने वर्तमान समाज की दशा और दिशा की परिचर्चा करते हुए महत्वपूर्ण कवि केदारनाथ सिंह की एक प्रभावी कविता को उद्धृत किया। उन्होंने साहित्य को समाज और समय की अनरूपता में खंगालने की बात की। उन्होंने कहा कि आज उदारीकरण और बाजारवाद का दौर है जिसमें मानवीय संवेदनाओं पर गहरी चोट पड़ी है। जब भी संवेदना के क्षेत्र में अर्थतंत्र का प्रवेश होता है तो 'आह' और 'वाह' को खरीद लिया जाता है। उन्होंने हिंदी के क्लासिक काव्य के उद्धरण देकर आज के साहित्य में समाज की बदलती हुई भूमिका को रेखांकित किया।

अभिविन्यास पाठ्यक्रम में विशेषज्ञ व्याख्यान देते हुए केंद्र निदेशक, प्रो. कृष्ण कुमार सिंह।

**द्वितीय सत्र** में महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा के मानविकी एवं समाजकार्य विद्यापीठ के अधिष्ठाता **प्रो. मनोज कुमार** ने **'गांधी, अंबेडकर और भगत सिंह विवाद, तथ्य एवं वास्तविकता'** विषय पर अपना व्याख्यान दिया। उन्होंने बताया कि यद्यपि गांधी अंबेडकर एवं भगत सिंह की वैचारिकी में सतह पर कुछ भिन्नताएँ दृष्टिगोचर होती हैं किन्तु काफी गहराई एवं केंद्रीय स्थिति में तीनों की पीड़ा समान है और तीनों मानवता के उत्थान और विकास हेतु अपने जीवन के अंतिम समय तक अग्रसर रहे। **तृतीय सत्र** में विनायक राव पाटिल महाविद्यालय बैजापुर, औरंगाबाद हिंदी के एसोसिएट प्रोफेसर **बलीराम रघुनाथ राव धापसे** ने भाषा तथा साहित्य विषय से संबंधित प्रतिभागियों की प्रस्तुति का मूल्यांकन किया। **चतुर्थ सत्र** में बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झाँसी हिंदी विभाग के अध्यक्ष, **डॉ. मुन्ना तिवारी** ने भाषा तथा साहित्य विषय से संबंधित प्रतिभागियों की प्रस्तुतिकरण तथा परियोजना कार्य का मूल्यांकन किया।

## दिनांक 08.06.2018

दिनांक 08.06.2018 के **प्रथम सत्र** में जी. जी. एस. इंद्रप्रस्थ विश्वविद्यालय, दिल्ली के शिक्षा शास्त्र की आचार्या, **प्रो. सरोज शर्मा** ने **'सतत् विकास के लिए शिक्षा एवं समग्र गुणवत्ता प्रबंधन'** विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने शिक्षा को सतत् विकास का आधार स्तम्भ स्वीकार करते हुए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने की वकालत की। इस हेतु उन्होंने प्रबंधन की विभिन्न स्तरों की चर्चा करते हुए विद्यार्थियों, शिक्षकों और संस्थाओं के बीच समन्वय स्थापित करते हुए संतुलित विकास पर जोर दिया। द्वितीय सत्र में जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली की आचार्य, **प्रो. हरजीत कौर भाटिया** ने शिक्षा शास्त्र विषय के प्रतिभागियों की प्रस्तुतीकरण का मूल्यांकन किया। भोजनावकाश के उपरांत अभिविन्यास कार्यक्रम से संबंधित समूह परिचर्चा एवं संवाद सत्र का आयोजन किया गया, जिसमें समस्त प्रतिभागियों ने अपने विचारों से एक दूसरे को लाभान्वित किया तथा अभिविन्यास पाठ्यक्रम की महत्ता एवं उपयोगिता को रेखांकित किया।

व्याख्यान सत्र के उपरांत भोजनावकाश के दौरान प्रतिभागीगण।

## दिनांक 09.06.2018

दिनांक 09.06.2018 के **प्रथम सत्र** में हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के भाषा विद्यापीठ के **प्रो. अनिल कुमार पाण्डेय** ने **हिंदी भाषा की वैज्ञानिकता** विषय पर बोलते हुए, यह बताया कि दुनिया में विद्यमान लगभग समस्त भाषाओं में सर्वाधिक वैज्ञानिक भाषा संस्कृत है जिससे हिंदी का प्रादुर्भाव एवं विकास हुआ है। हिंदी व्याकरण के विभिन्न पहलुओं पर उन्होंने प्रकाश डालते हुए कहा कि हिंदी बोलने, लिखने और सुनने में लगभग एकरूपता पाई जाती है। इसलिए आज के दौर में हिंदी विश्व पटल पर वैज्ञानिकता के साथ अपना प्रमुख स्थान बनाने में सफल हो रही है।

**द्वितीय सत्र** में म.गां.अं.हिं. विश्वविद्यालय, वर्धा के मानविकी एवं समाजकार्य विद्यापीठ के अधिष्ठाता **प्रो. मनोज कुमार** ने **'गांधी विचार समसामयिक चुनौतियाँ एवं अहिंसक समाधान'** विषय पर अपने व्याख्यान में बताया कि आज चहुंओर विद्यमान एवं प्रतिपन्न समस्याओं का समाधान गांधी के वैचारिक धरातल पर किया जा सकता है तथा अहिंसक जीवन

शैली को अपनाकर पारिवारिक, सामाजिक और यहाँ तक कि आध्यात्मिक समस्याओं एवं चुनौतियों का सामना किया जा सकता है।

**तृतीय सत्र** में महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति **प्रो. गिरीश्वर मिश्र** ने **गुणात्मक शोध प्रविधि** विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए यह बताया कि शोध लगभग सभी विषयों का अनिवार्य हिस्सा है। किन्तु शोध कार्य को त्रुटिपूर्ण पूजा की तरह व्यवहार में लाना चिंता का विषय है। शोध वस्तुतः संकल्पना, आंकड़ा, परीक्षण-प्रक्रिया तथा सिद्धांत निर्माण प्रणाली का सम्यक नाम है और इसी कारण समुचित शोध को लेकर समाज विज्ञानों के ऊपर बहुत सारे दबाव हैं। उन्होंने आगे बताया कि समझने अथवा जानने की सीमा या परिधि अनुभव है तथा मनुष्य का ज्ञान सापेक्ष होता है। एक समय में यह माना गया था कि विज्ञान ही ज्ञान पाने का राजमार्ग है लेकिन अब यह धारणा और इसके प्रतिमान बदल रहे हैं और समाज विज्ञानों में तो प्रतिमान या मानकता का अभाव दृष्टिगोचर होता है। वस्तुतः शोध के लिए प्रतिमान की भूमिका महत्वपूर्ण

प्रमाण-पत्र वितरण के दौरान मा. कुलपति, प्रो. गिरीश्वर मिश्र, मा. मुख्य अतिथि श्री जगदीश उपासने, मा. प्रतिकुलपति, प्रो. आनंद वर्धन शर्मा, निदेशक, प्रो. कृष्ण कुमार सिंह व अन्य।

होती है। शोध में प्रतिमानात्मकता, प्रासंगिकता एवं नवीनता होनी चाहिए। ज्ञान क्या ? क्यों ? कैसे ? कितना ? इत्यादि प्रश्नों का उत्तर अलग-अलग प्रतिमान के आधार पर अलग-अलग होता है। शोध का कार्य है ज्ञान पर चढ़े आवरण को हटाना अथवा ढके ज्ञान को सामने लाना।

**चतुर्थ सत्र** में माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय, भोपाल के कुलपति, **प्रो. जगदीश उपासने** ने **'राष्ट्र की अवधारणा और राष्ट्रवाद'** विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि राष्ट्र का निर्धारण एक निश्चित भौगोलिक परिवेश में रहने वाले व्यक्तियों, उनकी भाषा, भेष-भूषा, रहन-सहन, मान्यताएँ, धर्म एवं संस्कृति के आधार पर निर्धारित होता है और उक्त के संवर्धन और विकास हेतु जिन प्रत्ययों एवं विचारों को तत्संबंधित लोगों द्वारा आत्मसात किया जाता है, वही उनका राष्ट्रवाद है।

समापन अवसर पर उपस्थित श्री जगदीश उपासने, मा. कुलपति, भोपाल, प्रो गिरीश्वर मिश्र, मा. कुलपति, प्रो. आनंद वर्धन शर्मा, प्रतिकुलपति, तथा निदेशक, प्रो. कृष्ण कुमार सिंह।

## दिनांक 10.06.2018

दिनांक 10.06.2018 को अभिविन्यास पाठ्यक्रम का समापन समारोह सम्पन्न हुआ। समापन समारोह की अध्यक्षता महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा के कुलपति, प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने की। समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. जगदीश उपासने, कुलपति, माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय, भोपाल, विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रो.

अभिविन्यास पाठ्यक्रम के समापन अवसर पर मंचासीन विश्वविद्यालय के मा. कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र, मुख्य अतिथि श्री जगदीश उपासने, मा. कुलपति माखन लाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय, भोपाल मा. प्रतिकुलपति, निदेशक प्रो. कृष्ण कुमार सिंह, संयुक्त निदेशक प्रो. अवधेश कुमार, समन्वयक डॉ. शिरीष पाल सिंह तथा स्वागत करते हुए डॉ. संजय कुमार तिवारी।

आनंद वर्धन शर्मा, प्रति कुलपति, हिंदी शिक्षण अधिगम केंद्र के निदेशक, प्रो. कृष्ण कुमार सिंह, पाठ्यक्रम समन्वयक, प्रो. अवधेश कुमार, पाठ्यक्रम समन्वयक, डॉ. शिरीषपाल सिंह उपस्थित रहे तथा समापन समारोह का संचालन हिंदी शिक्षण

अधिगम केंद्र के रिसर्च एसोसिएट, डॉ. संजय कुमार तिवारी ने किया। इस समारोह का शुभारंभ दीप प्रज्वलन तथा कुल गीत के साथ हुआ।

अतिथियों का स्वागत पाठ्यक्रम समन्वयक प्रो. अवधेश कुमार ने किया। उनहोंने सभी गणमान्य विद्वतजनों, अतिथियों का स्वागत किया और प्रतिभागियों को बधाई और शुभकामनाएं दीं। समापन सत्र में सभी प्रतिभागियों ने अपने अनुभव साझा करते हुए अपने विचार प्रकट किए। कार्यक्रम में प्रति-कुलपति, प्रो. आनंद वर्धन शर्मा ने प्रतिभागियों के बीच कार्यक्रम की सफलता से जुड़ी हुई कुछ बातें बहुत मत्वपूर्ण तरीके से प्रेषित कीं। भारतीय परंपरा और संस्कृति का उल्लेख करते हुए ज्ञान के आदान-प्रदान की विशेषताओं को बताया। मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. जगदीश उपासने ने भारतीय संस्कृति की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए ज्ञान, विज्ञान और संवाद के गुणों को सराहा तथा समाज में शिक्षक की जिम्मेदारी की भूमिका को बहुत महत्वपूर्ण बताया। उन्होंने सफल हुए कार्यक्रम के लिए सहभागी रहे विद्वतजनों और प्रबुद्ध प्रतिभागियों की तारीफ की एवं शुभाकांनाएं प्रेषितकी।

समूह फोटोग्राफ के समय मा. कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र, मा. मुख्य अतिथि श्री जगदीश उपासने, मा. प्रतिकुलपति प्रो. आनंद वर्धन शर्मा, निदेशक कृष्ण कुमार सिंह, समन्वयक डॉ. शिरीष पाल सिंह, डॉ. संजय कुमार तिवारी एवं समस्तप्रतिभागी।

सत्र की अध्यक्षता कर रहे माननीय कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि हम सब ज्ञान की यात्रा पर निकले हुए पथिक हैं जो कभी भी पूरी नहीं होती। हम सब सीखते हुए समृद्ध होते रहते हैं और आगे बढ़ते रहते हैं। उन्होंने अभिविन्यास पाठ्यक्रम के बारे में अपनी पूर्व योजनाओं तथा अपनी संकल्पित योजनाओं के बारे में भी बताया। उन्होंने हिंदी शिक्षण अधिगम केंद्र को लगातार समृद्ध करने के लिए अपनी प्रतिबद्धता और जुड़ाव के निमित्त बहुत सी सारगर्भित बातें कहीं। उन्होंने हिंदी के संवर्धन और विकास के लिए देश के बौद्धिक और कामकाजी तबके को सजग करने की आवश्यकता पर बल दिया। इस सत्र में धन्यवाद ज्ञापन कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. शिरीषपाल सिंह ने किया। कार्यक्रम राष्ट्रगान के साथ सम्पन्न हुआ।